असमान की खोज

असमान की दूरियों को देख

मन में एक लालसा उठी

कितनी दूर है यह

क्या इस तक पहुँच पाऊँगा मैं

कभी ऊँची इमारत पर

तो कभी लंबी सीढ़ी के साहारे

उड़ते जहाज से कभी

कभी पश्रियों सा उड़कर

कोशिश मैंने कर ली बहुत

पर आसमान था ऊँचा उढता ही गया

आखिर हारकर , बैठा मैं नदी किनारे

देख आसमॉ को, कौंधे मेरे मन के नज़ारे

आखिर आसमॉ मेरे पास था

छूने में सहज, शीतल ,हलका वेग था

निरमम् अन्दर से

सहेजे हर वस्तू को

अनन्त ,अविस्मरनिय

उदयम ;नदी और सूर्य का

हर कुछ समेटे अपने ऑचल में

शोभित अग्रवाल